Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

भारतीय नवजागरण का अग्रदूत – राजा राममोहन राय

Narender Kumar*

MA History, NET

शोध सारः राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत और आधुनिक भारत का जनक कहा जाता है। भारतीय सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण के क्षेत्र में उनका विशिष्ट स्थान है। वे ब्रहम समाज के संस्थापक, भारतीय भाषायी प्रेस के प्रवर्तक जनजागरण और सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रणेता तथा बंगाल में नव-जागरण युग के पितामह थे। उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और पत्रकारिता के कुशल संयोग से दोनों क्षेत्रों को गति प्रदान की। उनके आन्दोलनों ने जहाँ पत्रकारिता को चमक दी, वहीं उनकी पत्रकारिता ने आन्दोलनों को सही दिशा दिखाने का कार्य किया। राजा राममोहन राय की दूरदर्शिता और वैचारिकता के सैकड़ों उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं। हिन्दी के प्रति उनका अगाध स्नेह था। वे रूढ़िवाद और कुरीतियों के विरोधी थे लेकिन संस्कार, परंपरा और राष्ट्र गौरव उनके दिल के करीब थे। इस शोध-पत्र में भारतीय नवजागरण का अग्रदूत के रूप में राजा राममोहन राय के सुधार आन्दोलनों का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः नवजागरण, सामाजिक सुधार आंदोलन, रूढ़िवाद और कुरीतिया।

----------X----------

राजा राम मोहन राय एक उच्च कोटि के विद्वान और देशभक्त थे. उन्हें आधुनिक भारत का जनक भी कहा जाता है. वे कई भाषाओं में पारंगत थे. वे बहुत ही व्यावहारिक एवं मानवतावादी थे. उनका मानना था कि जब तक अंधविश्वास और जाति प्रथा पर प्रहार नहीं होगा, तब तक हिन्दू समाज प्रबलता के साथ खड़ा नहीं हो सकता. हिन्दुत्व के प्रचार- प्रसार एवं सामाजिक संरचना में विकार- हीन गतिशीलता लेन के लिए उन्होंने सन 1828 में ब्रहम समाज की स्थापना की। राजा राममोहन राय को भारतीय नवजागरण का अग्रदूत कहा जाता है। इनका जन्म 22 मई, 1772 को बंगाल के हुगली जिले में स्थित राधानगर में हुआ था। राजा राममोहन राय पहले भारतीय थे जिन्होंने ने सर्वप्रथम भारतीय समाज में व्याप्त धार्मिक और सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए आंदोलन किया। राजा राममोहन राय मानवतावादी थे, उनकी विश्व बंधुत्व में घोर आस्था थी। ये जीवन की स्वतंत्रता तथा संपत्ति ग्रहण करने के लिए प्राकृतिक अधिकारों के समर्थक थे। राजा राम मोहन राय ने 1815 में कलकत्ता में आत्मीय सभा की स्थापना करके हिंदू धर्म की बुराइयों पर प्रहार किया। राजा राममोहन राय एकेश्वरवादी थे। उन्होंने इस संस्था के माध्यम से एकेश्वरवाद का प्रचार-प्रसार किया। सन् 1828 में राजा राम मोहन राय ने कोलकाता में ब्रहम सभा की नामक एक संस्था की स्थापना की जिसे बाद में ब्रहम समाज का नाम दे दिया गया। राजा राममोहन राय ने अपने संगठन ब्रहम समाज के माध्यम से हिंदू समाज में व्याप्त सती-प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, वेश्यागमन, जातिप्रथा आदि बुराइयों के विरोध में संघर्ष किया। विधवा पुनर्विवाह का इन्होने समर्थन किया। ब्रहम समाज ने जाति प्रथा पर प्रहार किया तथा स्त्री पुरुष समानता पर बल दिया। धार्मिक क्षेत्र में इन्होंने मूर्तिपूजा की आलोचना करते हुए अपने पक्ष को वेदोक्तियों के माध्यम से सिद्ध करने का प्रयास किया। इनका मुख्य उद्देश्य भारतीयों को वेदांत के सत्य का दर्शन कराना था।

राजा राम मोहन राय के विचारों से प्रभावित होकर देवेंद्र नाथ टैगोर ने 1843 में ब्रहम समाज की सदस्यता ग्रहण की। ब्रहम समाज में शामिल होने से पूर्व देवेंद्र नाथ टैगोर ने तत्वबोधिनी सभा (1839) का गठन किया था। 1857 में केशव चंद्र सेन ब्रहम समाज के आचार्य नियुक्त किये गए। केशव चंद्र सेन के प्रयत्नों से ब्रहम समाज ने एक अखिल भारतीय आंदोलन का रुप ले लिया। राजा राम मोहन राय ने संवाद कौमुदी और मिरात उल अखबार प्रकाशित कर भारत में पत्रकारिता की नींव डाली। संवाद कौमुदी शायद भारतीयों द्वारा संपादित, प्रकाशित तथा संकलित प्रथम भारतीय समाज-पत्र था। राजा राम मोहन राय ने ईसाई धर्म का अध्ययन करके इसाई धर्म पर एक पुस्तक की रचना की, जिसका नाम प्रिसेप्ट ऑफ जीजस था।

www.ignited.in

राजा राम मोहन राय ने अनेक भाषाओं, अरबी, फारसी, संस्कृत जैसी प्राचीन भाषाएँ तथा अंग्रेजी, फ्रांसीसी, लैटिन, यूनानी आदि पाश्चात्य भाषाओं के ज्ञाता थे। राजा राम मोहन राय ने शिक्षा के क्षेत्र में भी कार्य किया। इन्होंने 1825 में वेदांत कॉलेज की स्थापना की। राजा राममोहन राय ने धर्म, समाज, शिक्षा, आदि के क्षेत्र में सुधार के साथ ही राजनीतिक जागरण का भी प्रयास किया। उनका कहना था कि स्वतंत्रता मनुष्य का अमूल्य धन है। वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ राजनीतिक स्वतंत्रता के भी हिमायती थे। बंगाली बुद्धिजीवियो में राजा राम मोहन राय और उनके अनुयायी ऐसे पहले बुद्धिवादी थे, जिन्होंने पाश्चात्य संस्कृति का अध्ययन करते हुए उसके बुद्धिवादी एवम प्रजातांत्रिक सिद्धांतों, धारणाओं और भावनाओं को आत्मसात किया।

हिन्दू कॉलेज की स्थापना में योगदान

वे अपने समय के सबसे बड़े प्राच्य भाषों के ज्ञाताओं में से एक थे। उनका विश्वास था कि भारत की प्रगति केवल उदार शिक्षा के द्वारा होगी, जिसमें पाश्चात्य विद्या तथा ज्ञान की सभी शाखाओं की शिक्षण व्यवस्था हो। उन्होंने ऐसे लोगों का पूर्ण समर्थन किया, जिन्होंने अंग्रेजी भाषा तथा पश्चिमी विज्ञान के अध्ययन का भारत में आरम्भ किया और वे अपने प्रयत्नों में सफल भी हुए। उन्होंने हिन्दू कॉलेज की स्थापना में सहायता दी। यह संस्था उन दिनों की सर्वाधिक आधुनिक संस्था थी।

समाचार पत्रों की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष

अंग्रेज ईसाई मिशनरी ने अंग्रेजी भाषा में 'फ्रेंड ऑफ इण्डिया' नामक एक पत्र जारी किया था। इसी वर्ष गंगाधर भट्टाचार्य ने 'बंगाल समाचार' का प्रकाशन शुरू किया। बंगाल में एक उदारवादी पत्र 'केलकटा जर्नल' जेम्स सिल्क बकिंधम ने अक्टूबर सन् 1818 ई. में शुरू किया। सन् 1821 ई. में ताराचंद्र दंत और भवानी चरण बंधोपाध्याय ने बंगाली भाषा में साप्ताहिक पत्र 'संवाद कौमुदी' निकाला, लेकिन दिसंबर 1821 ई. में भवानी चरण ने संपादक पद से त्याग पत्र दे दिया, तो उसका भार राजा राममोहन राय ने संभाला। अप्रैल 1822 ई. में राजा राममोहन राय ने फारसी भाषा में एक साप्ताहिक अखबार 'मिरात-उल-अखबार' नाम से शुरू किया, जो भारत में पहला फारसी अखबार था। साम्राज्यवादी ब्रिटिश सरकार को राजा राममोहन राय के धार्मिक वाचिर और इंग्लैण्ड की आयलैंड विरोधी निति को आलोचना पसंद नहीं आई। परिणामस्वरूप सरकार ने प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाने के लिए अध्यादेश जारी किया, जिसके विरोध में राजा राममोहन राय ने 'मिरात-उल-अखबार' का प्रकाशन बंद कर दिया। राजा राममोहन राय ने समाचार पत्रों की स्वतंत्रता के लिए भी कड़ा संघर्ष किया था। उन्होंने स्वयं एक बंगाली पत्रिका 'सम्वाद-कौमुदी' आरम्भ की और उसका सम्पादन भी किया। यह पत्रिका भारतीयों द्वारा सम्पादित सबसे पुरानी पत्रिकाओं में से थी।

ब्रह्मसमाज की स्थापना

राजा राममोहन राय आधुनिक शिक्षा के समर्थक थे तथा उन्होंने गणित एवं विज्ञान पर अनेक लेख तथा पुस्तकें लिखीं। 1821 में उन्होंने 'यूनीटेरियन एसोसिएशन' की स्थापना की। हिन्दू समाज की कुरीतियों के घोर विरोधी होने के कारण 1828 में उन्होंने 'ब्रह्म समाज' नामक एक नये प्रकार के समाज की स्थापना की। 1805 में राजा राममोहन राय बंगाल में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में सम्मलित हुए और 1814 तक वे इसी कार्य में लगे रहे। नौकरी से अवकाश प्राप्त करके वे कलकत्ता में स्थायी रूप से रहने लगे और उन्होंने पूर्ण रूप से अपने को जनता की सेवा में लगाया। 1814 में उन्होंने आत्मीय सभा को आरम्भ किया। 20 अगस्त, 1828 में उन्होंने ब्रह्मसमाज की स्थापना की। 1831 में एक विशेष कार्य के सम्बंध में दिल्ली के मुगल सम्राट के पक्ष का समर्थन करने के लिए इंग्लैंड गये। वे उसी कार्य में व्यस्त थे कि ब्रिस्टल में 27 सितंबर, 1833 को उनका देहान्त हो गया। उन्हें मुगल सम्राट की ओर से 'राजा' की उपाधि दी गयी। अपने सब कार्यों में राजा राममोहन राय को स्वदेश प्रेम, अशिक्षितों और निर्धनों के लिए अत्यधिक सहानुभूति की भावना थी। अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह के सम्भव होने के कारण उन्होंने अपने देशवासियों में राजनीतिक जागृति की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए जनमत को शिक्षित किया। उन्होंने सम्भव उपायों से लोगों की नैतिक उन्नति के यथासम्भव प्रयत्न किए।

ब्रह्म समाज के सिद्धान्त

ईश्वर केवल एक है तथा उसी ने संपूर्ण सृष्टि की रचना की है। ईश्वर की पूजा आत्मा की शुद्धि के साथ करनी चाहिए। समस्त धर्मों की शिक्षाओं से सत्य ग्रहण करना चाहिए। ईश्वर की उपासना तथा प्रार्थना से ही मोक्ष प्राप्त हो सकता है। ईश्वर के प्रति पितृ भावना, मनुष्य जाति के प्रति भातृ भावना तथा प्राणि मात्र के प्रति दया की भावना रखना ही धर्म है। ईश्वर की आराधना का समस्त वर्णों एवं जातियों को समान अधिकार है। पूजा के लिए किसी आडम्बर की

www.ignited.in

आवश्यकता नहीं है। ईश्वर सभी की प्रार्थना सुनता है तथा पाप एवं पुण्य के अनुसार ही दंड या पुरस्कार देता है।

धार्मिक सुधारक

राजा राममोहन राय एक धार्मिक सुधारक तथा सत्य के अन्वेषक थे। सभी धर्मों के अध्ययन से वे इस परिणाम पर पंहुचे कि सभी धर्मों में अद्वैतवाद सम्बधी सिद्धांतों का प्रचलन है। मुसलमान उन्हें मुसलमान समझते थे, ईसाई उन्हें ईसाई समझते थे, अद्वैतवादी उन्हें अद्वैतवाती मानते थे तथा हिन्दू उन्हें वेदान्ती स्वीकार करते थे। वे सब धर्मों की मौलिक सत्यता तथा एकता में विश्वास करते थे।

राजा राममोहन राय के समाज सुधार संबंधी कार्य

- सती प्रथा का विरोध
- अंधविश्वास का विरोध
- बहु विवाह का विरोध
- बाल विवाह का विरोध
- जाति प्रथा का विरोध
- ईश्वर एक है की मान्यताओं को बढ़ावा देना
- स्त्री और पुरुषों को समानता का अधिकार
- विधवा स्त्रियों का पुनर्विवाह
- पिता की संपत्ति पर पुत्रियों का अधिकार

सती प्रथा हटाने को आन्दोलन

राजा राम मोहन राय के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी - सती प्रथा का निवारण। उन्होंने ही अपने अथक प्रयासों से सरकार द्वारा इस कुप्रथा को गैर-कानूनी दंण्डनीय घोषित करवाया। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा को मिटाने के लिए प्रयत्न किया। उन्होंने इस अमानवीय प्रथा के विरुद्ध निरन्तर आन्दोलन चलाया। यह आन्दोलन समाचार पत्रों तथा मंच दोनों माध्यमों से चला। इसका विरोध इतना अधिक था कि एक अवसर पर तो उनका जीवन ही खतरे में था। वे अपने शत्रुओं के हमले से कभी नहीं घबराये। उनके पूर्ण और निरन्तर समर्थन का ही प्रभाव था, जिसके कारण लॉर्ड विलियम बैंण्टिक 1829 में सती प्रथा को बन्द कराने में समर्थ हो सके। जब कट्टर लोगों ने इंग्लैंड में 'प्रिवी कॉउन्सिल' में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया, तब उन्होंने भी अपने प्रगतिशील मित्रों और साथी कार्यकर्ताओं की ओर से ब्रिटिश संसद के सम्मुख अपना विरोधी प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। उन्हें प्रसन्नता हुई जब 'प्रिवी कॉउन्सिल' ने 'सती प्रथा' के समर्थकों के प्रार्थना पत्र को अस्वीकृत कर दिया। सती प्रथा के मिटने से राजा राममोहन राय संसार के मानवतावादी सुधारकों की सर्वप्रथम पंक्ति में आ गये।

निष्कर्ष

समाज की समस्याओं को सत्ता के केन्द्र तक पहुँचाने वाले राजा राम मोहन राय ने एक ऐसे मार्ग का निर्माण किया जिसपर चल कर भावी धर्म और समाज सुधारक आपके विचारों को क्षितिज तक पहुँचाते रहेंगे। ये कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि राजा राम मोहन राय भारतीय राष्ट्रीयता के पैगम्बर और आधुनिक भारत के जनक थे। राजाराममोहन राय को आधुनिक युग का निर्माता, आधुनिक भारत का जनक इसलिए कहा जाना उचित हैय क्योंकि उन्होंने देश व जाति-उत्थान के लिए महान कार्य किये। मानवता के लिए किये गये उनके कार्यों के लिए भारत उनका ऋणी रहेगा। टैगोर ने ठीक ही कहा है- "राजाराममोहन राय इस शताब्दी के महान् पथ निर्माता हैं। उन्होंने भारी बाधाओं को हटाया है, जो हमारी प्रगति को रोकती हैं। उन्होंने हमको मानवता के विश्वव्यापी सहयोग के वर्तमान युग में प्रवेश कराया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

राजा राममोहन रायः विनोद तिवारी, मनोज पब्लिकेशन, प्रकाशित वर्षः 2005 आईएसबीएनः 81-8133-596-1

K.C. Vyas (1957). 'The Social Renaissance in India' Vora & Co, Publishers Private ltd, Kalbadevi Road, Bombay 2, 1957', Page No. 14.

Majumdar, J.K. (1953). Raja Rammohun Roy, The father of Modern India. Raja Rammohun Roy The Father of Modern India, (pp. 226-241).

Mukherji,Hiren (1975). Indian Renaissance and Raja Ram Mohan Roy. Poona.

Corresponding Author

Narender Kumar*

MA History, NET

narenderkumar1234@gmail.com